بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

13 September 2019 - 13 Muharram 1441 AH

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

“अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग-1)”

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग 1)**

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱجْتَنِبُواْ كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُواْ وَلَا
يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ
وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝

या -'अय्युहल्लज़ीन 'आमनुज-तनीबू कसीरम -मिनाज़-ज़नन: 'इन्ना ब' दज़-ज़न्नी 'इसमुव्व-व ला तजस्ससू व ला यह्तब- ब' -दुकुम ब' -दा. 'युहिब्बु 'अहदुकुं 'अय्य-य' -कुल लह्मा 'अखीही मयतन-फकरीहतुमुह? वत्ताकुल-लाह: 'इन्नल्लाह तव्वाबुर-रहीम.

ऐ ईमानदारों बहुत से गुमान (बद) से बचे रहो क्योंकि बाज़ बदगुमानी गुनाह है और आपस में एक दूसरे के हल की तोह में न रहा करो और तुममें से एक दूसरे की ग़ीबत करे क्या तुममें से कोई इस बात को पसंद करेगा की अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए तो तुम उससे (ज़रूर) नफ़रत करोगे और खुदा से डरो, बेशक खुदा बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान हैं| (अल -हुजुरत 49: 13)

मैंने आज फिर से आपको संबोधित करने के लिए चुना है - पहले की तरह मैंने इस विषय पर कई उपदेश दिए, साथ ही साथ **सुरः अल-हुजुरत** पर -**"ग़ीबत"** पर भी दिए।

यह एक और स्पष्टीकरण है, जो मैं आपके सामने रख रहा हूँ, क्योंकि यह सुरः एक बहुत ही महत्वपूर्ण सुरः है, जिसमें अल्लाह (स व त) ने "ग़ीबत" के खिलाफ विश्वासियों के समुदाय के ध्यान को आकर्षित किया है। जैसा कि आप जानते हैं, "ग़ीबत" का अर्थ है, किसी की चुगली करना, एक व्यक्ति के खिलाफ बात करना, उसकी पीठ के पीछे उसे एक गुणहीन प्रकाश में रखना [यानी जब वह मौजूद न हो]। और अल्लाह ने गंभीर शब्दों में इस तरह की प्रथा की निंदा की है और अगर लोग इन चीज़ों को अच्छी तरह से समझ जाते हैं, तो वे कभी भी किसी के पीछे चुगली करने की हिम्मत नहीं करेंगे। और जिस तरह से अल्लाह इस विषय को गहराई से समझाता है, हमें एक धारणा मिलती हैं कि क्यों लोग इस तरह के घृणास्पद अभ्यास की ओर आकर्षित होते हैं।

"ग़ीबत" एक ऐसा दुराचार है, जो आपको अपनी ओर आकर्षित करता है और आप खुद को बेबस पाते हैं [और इसमें मुग्ध होकर लिप्त हो जाते हैं]। जब आप अल-हुजुरत के अध्याय को गहराई से पढ़ते हैं, तो आप इसके विषय से भयभीत हो जाते हैं [अर्थात किसके खिलाफ अल्लाह द्वारा विश्वासियों को चेतावनी दी गई हैं]। जब मैं इसे पढ़ता हूँ और इस अध्याय पर गहराई से विचार करता हूँ, मुझे याद आता है कि कैसे जमात अहमदिया अपने पूर्व **अमीर अमीन जोवाहिर** के साथ और उस समय की उनकी प्रबंध समिति ने ऐसी ईर्ष्या,गुमान और संदेह प्रकट की, जो मेरे प्रति एक विशाल तिरस्कार के रूप में विकसित हुई और यह नफ़रत बढ़ती ही चली गई और यह अन्य लोगों तक फैल गई [यहां तक कि छोटे बच्चों तक भी] और इस तरह उनका दिल इन दुराचारों से दुष्ट हो गया और उनकी यह दुष्टता उनके चेहरों पर झलक रही थी। उन्होंने मेरे खिलाफ और कलुषित भाषा का इस्तेमाल किया, तिरस्करणीय कार्य किया और प्रतिबंध लगाए। और वर्ष 2000 में पूर्व अमीर की रिपोर्ट पर खुद ही को उन्होंने नींव बनाते हुए, अहमदिया आंदोलन के स्वर्गीय चौथे खलीफा ने- मेरे विवरण को सुने बिना - प्रतिबंधों को लगाया और उसके ऊपर हम पर अभिशाप भेजे और हमारे खिलाफ अन्य घृणाजनक और गंभीर शब्दों का इस्तेमाल किया। दरअसल, उन्होंने बिना तक्वा के अभिनय किया (धार्मिकता / धर्मनिष्ठता के)।

और ये सब केवल इसलिए हुआ, क्योंकि मैंने कुछ खुलासों का हवाला दिया, जो अल्लाह ने मुझे प्रदान किया था। उन्होंने ऐसा अभिशाप भेजा, मानो, जैसे वह मेरे साथ मुबाहिला (प्रार्थना का मल्ल्युद्ध) कर रहें हों। जब पूर्व अमीर के स्थान पर, उन्होंने खुद को एक महान नायक के रूप में लिया और शुक्रवार के उपदेशों पर शुक्रवार उपदेश दिए, हमारे गोश्त को चाव के साथ खाने लगे [अर्थात् चुगली करने लगें]। वर्ष 2001 की शुरुआत में और उसके बाद में भी, वहाँ इतनी ज़्यादा चुगली हो रही थी। और इस तरह की निंदा न केवल शुक्रवार के उपदेशों में हुई, बल्कि सभी शाखाओं की बैठकों में भी, और इस तरह के कार्यक्रमों में भी- जैसे की वादा किए गए मसीह (मसीह माउद) दिवस में, वादा किए गए सुधारक (मुस्लेह माउद) दिवस में और खिलाफत दिवस में भी इस तरह की निंदा की गई। ये सभी "दिवस " मुनीर अज़ीम दिवस बन गए। खुद्दाम, अंसार के इज्तेमा में और जलसा सलाना में मुनीर अज़ीम पर ज़्यादातर बातचीत हुई !

संक्षेप में, कोई ऐसा कार्यक्रम आयोजित नहीं किया गया था, जिसमें मुनीर अज़ीम और उनके **"तथाकथित खुलासों"** का उल्लेख नहीं हुआ हो । वास्तव में, यह उनके लिए ध्यान केंद्रित करने का एक सबसे महत्वपूर्ण विषय बन गया था, उदाहरण के लिए, मुनीर अज़ीम कैसे एक विद्रोही आदि थे।

और तथाकथित पूर्व अमीर इस तरह के अपमानित स्तर पर पहुंच गए, कि वह उनके मुल्लाओं के साथ मिलकर वर्णित करने लगे कि खिलाफत खतरे में थी। उन्होंने अहमदियों (पुरुषों, महिलाओं और यहां तक कि बच्चों) के दिलों में हमारे प्रति इतनी नफ़रत पैदा की, कि जब तक वे मज़हब के क्षेत्र में सभी सीमाओं को पार नहीं कर गए। वे [अर्थात उनके बीच नफ़रत से भरे हुए लोग] **"खिलाफत हमारा जीवन है"** का नारा लगाना शुरू हो गए; और, उस जहर के नशे में जो उन्होंने उनके अंदर डाला था, वे यह घोषित करने के लिए तैयार थे, कि वे टूट पड़ेंगें [यानी मार डालेंगें] जो खलीफा का विद्रोह करते हैं। और उस पूर्व-तथाकथित अमीर को जमात के सदस्यों से कई सम्मान मिले [अर्थात 'खिलाफत' को 'बचाने' में 'सफल' होने के लिए]।

इसलिए, उन सभी चुगली और अफवाहों के साथ, जो उन्होंने एक दूसरे के साथ कि थी, एक ख़लीफ़ा ने मेरी बात सुने बिना उन चापलूसी करने वालों पर विश्वास किया। तो, अब देखें कि जमात अहमदिया कहाँ जा रहा है ... इसके लुप्त जाने कि ओर! अल्लाह (नूर-ए-इलाही) कि रौशनी वादा किए गए मसीह (अ.स.) की जमात से गायब हो गया है। मुझे यह कहना होगा कि 90% अहमदियों को हमारे खिलाफ यह नफ़रत थी /और हैं, और इस नफ़रत ने उनके दिलों को दुष्टतापूर्ण कर दिया हैं और हमारे खिलाफ उनका रवैया खराब हो गया हैं और बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा हैं, और वास्तव में, यह अंधकार उनके दिलों में इस तरह चिपक गया है मानो, जैसे वे मुकम्मल अँधेरे में किसी काले पत्थर पर बैठे हों।

तो, जमात अहमदिया को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखें, वे इस्लाम की शिक्षाओं को और वादा किए गए मसीह (अ.स.) कि शिक्षाओं को भी अधिक मात्रा में कायम नहीं रख रहें है । उन्होंने अपने ख़लीफ़ा को देव प्रतिमा बना लिया हैं और उन्होंने उन दिव्य शिक्षाओं को रौंद डाला हैं। आखिर में, जो बच जाता है वह केवल द्वेष और घृणा है।

दूसरी ओर, जिन लोगों के दिलों में तक्वा (अल्लाह का डर) है, वे अपने भीतर अल्लाह की एकता पर दृढ़ विश्वास रखते हैं, और वे खुद को इस खलीफा / देव प्रतिमा कि -इबादत करना, चुगली करना, ईर्ष्या, आदि से निकाल देते हैं। वे राजवंश, परिवार-अनुभूति के इस जमात को छोड़ना पसंद करते हैं, एक जमात जहाँ पर हर समय उसके शीर्ष पर एक ही जैसे लोग रहते हैं, और वहाँ एक ही [अधर्मी] निर्देश दिए जाते है, जैसे : हमें बहिष्कार करना, हम से घृणा करना, झूठी अफवाहें फैलाना -चुगली करना और हम पर शक करना। तो, एक मुत्ताकी [मुत्ताकुन] देखेंगें, कि ये सब अल्लाह की शिक्षा नहीं हैं। वे उस मंडली को छोड़ देते हैं, ताकि वे गुनाह में न पड़ें।

तो जब आप **सुरः अल-हुजुरत** को पढ़ते हैं, जहाँ अल्लाह (स व त) कहता हैं: हे! वे लोगों जो ईमान को लाए हो (किस पर ईमान लाए हो?) - अल्लाह पर ईमान (निष्ठा) लाना, अल्लाह के आदेश पर ईमान लाना, उसके निर्देशों पर ईमान लाना- अल्लाह तुम्हें संदेह, दुविधाओं से बचने के लिए कहता हैं। और

इनमें से बहुत सारे संदेह और दुविधा कि ऐसी बातें हैं, जो इस रास्ते तथा उस रास्ते बीत चुकीं हैं, यह एक बहुत बुरी आदत है, जिसमें लोग लिप्त हो जाते हैं और वास्तव में, इनमें से कुछ संदेह गुनाह बन जाते हैं।

वहाँ ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें दूसरे लोगों पर शक करने की बुरी आदत होती है, जो बहुत खतरनाक है। वे अन्य लोगों के निजी मामलों को जानने के लिए, सभी तरह के सवालों को सामने रखते हैं, हर बात को, हर विस्तार से जानना चाहते हैं। वास्तव में, जो भी कुछ वे करते हैं, उन सभी में और अपने निजी मामलों के लिए भी, यह बहुत संगीन हो जाता है,

वे सावधानी बरततें हैं, कि किसी को भी इसके बारे में पता न होने दें, जबकि वे दूसरों के बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं।

इस प्रकार, जो लोग दूसरों की जासूसी करने के प्रति चाह रखते हैं, वे अपनी जासूसी द्वारा प्राप्त जानकारी को फैलाते हैं और वे मामले को गंभीरता से बढ़ाते हैं। इस तरह, वे फ़र्ज़ी ख़बरों को ईंधन देने में तत्पर्यता से भाग लेते हैं, लोगों को नफ़रत, झगड़े और विवादों के लिए उत्तेजित करते हैं। यह वास्तव में एक बहुत ही गंभीर पाप है, क्योंकि संदेह का जासूसी के साथ गहरा संबंध है, और इस प्रकार के लोग, संदिग्ध लोग और जासूस बहुत खतरनाक होते हैं।

दूसरी ओर, एक [अच्छा] व्यक्ति जो स्नान करके और साफ कपड़े पहनता है, वह अपनी शक्ति से सब कुछ कर देगा, ताकि सभी गंदगी, धूल और गलत / बुरी लेनदेन से वह दूर रहें; संक्षेप में, सभी काम से जो उसे कलंकित करने के लिए उत्तरदायी हैं। वह साफ रहने के महत्व को जानता है और खुद को साफ रखता है। तो, इसी तरह आपको अपने ईमान को साफ रखना चाहिए। आपको संदेह, जासूसी, और चुगली से बहुत दूर रहना चाहिए। यह पद्य [सुरः अल-हुजुरत से, जो आपके सामने रखा गया है] उल्लिखित करता है [अल्लाह कहता है] की किसी की चुगली नहीं करना, किसी के बारे में बुरा नहीं बोलना, यानी किसी की अनुपस्थिति में उनके खिलाफ आपको बात नहीं करनी चाहिए। वहाँ ऐसे भी लोग है जो शक, संदिग्ध करने की आदत बना लेते है,और वह (पुरुष)/ वह (महिला) शीघ्र ही निर्णय पर पहुँच जाते हैं, की इस तरह की और ऐसी चीजें हुई होंगी, और वह जो जासूसी करते थे, तब इस तरह का व्यक्ति अपने आपको उसके सभी संदेहों और दुविधाओं के साथ गुनाहों की गहराई में दबा देता है। वास्तव में यह बहुत चिंताजनक / संगीन है। इसीलिए अल्लाह ने हमें सुरः अल-हुजुरत, अध्याय 49 में **"तजस्सुस"** के रूप में ऐसी बीमारियों के खिलाफ चेतावनी दी है।

"तजस्सुस" का अर्थ है, कि एक शख़्श दूसरों में दोष ढूंढता है। वह अपने साथी भाई की खामियां तलाशने में आनंद लेता है। जब वह दूसरे लोगों की खामियों की तलाश करने में अपने दिमाग में एक सटीक उद्देश्य रखता है। ऐसे लोग अपने भाई या बहन के लिए गहरी नफ़रत रखते है और उसके ऊपर, वे उन खामियों की तलाश करने के लिए जासूसी करते हैं और फिर वे उस जानकारी का उपयोग जो उन्हें उसके (पुरुष / महिला) खिलाफ चुगली करने के लिए मिलती है, और यह स्थिति पतित हो जाती है [अर्थात बदतर और भी बदतर हो जाती हैं] और गंभीर रूप से समाप्त होती है। [आम तौर पर बोला गया हैं] की

आप एक माँ को अपने बच्चों की चुगली करते हुए नहीं देखेंगे, या आप कभी भी बच्चों को उनके माता-पिता की चुगली करते नहीं देखेंगे [वहाँ क्रम के अपवाद हैं], और अगर वास्तव में ऐसी कोई परिस्थितयाँ हैं, जहाँ माता-पिता उनके बच्चों की चुगली करते हैं और इसके विपरीत, तो इसका मतलब है, कि रिश्तों में इस पागलपन के दूर न होने पर दरार पड़ जातीं हैं। किसी की चुगली करना, इसका मतलब है, कि आप उस शख़्श को पसंद नहीं करते हैं [जिसकी आप चुगली कर रहे हैं] या आप उससे ईर्ष्या कर रहे हैं।। यह ऐसी नापसंद और ईर्ष्या है, जो आपको उसकी चुगली करने के लिए उकसाती है। आप पहले उसकी जासूसी करते हैं और संदेह के साथ, एक ऐसी स्थिति का रूप ले लेती है, जो वास्तव में सच नहीं हो सकती है। यह आपकी दुविधा और जासूसी है, जो आपको ऐसे और ऐसे निर्णयों तक पहुँचाती है।

अभी इस बारे में ज़रा सोचें : की जब ऐसे लोग जासूसी करते हैं और शक करते हैं और एक निर्णय पर पहुँचते हैं, तो अगर कभी उन्होंने वास्तव में कुछ देखा, लेकिन वे झूठ को फैला रहें हैं, अर्थात वे उसका वर्णन करना शुरू करते हैं, जो उन्होंने देखा ही नहीं है। उनकी / आपकी शंका और जासूसी, जो मुख्य रूप से एक बुरे इरादे के आधार पर शुरू हुई, फिर बदतर हो जाती हैं, जो भी कोई निर्णय पर वे / आप पहुँचते हैं, आप इसके बारे में निश्चित भी नहीं होते हैं। सिर्फ आप ने इस तरह का झूठ [गलत जानकारी] फैलाना शुरू किया हैं और आप ऐसे स्थितियों में / गुनाहों में उसका आनंद लेते है।

यह एक बिल्कुल नई मनोवैज्ञानिक दुनिया है, जिसमें चुगली करने वाला खुद को तृप्त करता है, और कुरान में इस का क्रमश से उल्लेख किया गया है, सही उसी तरह जैसे मानव स्वभाव में आभास होता है। लेकिन यह एकमात्र कारण नहीं है, कि लोग दूसरों की चुगली करते हैं। इसके अलावा, इसका ऐसा मतलब नहीं है, की चुगली करने का कोई अन्य रूप नहीं है। बिना संदेह / शंका के भी, वहाँ भी "ग़ीबत" (चुगली करना) है। उदाहरण के लिए, यदि आप पहले से ही किसी के दोषों को जानते हैं, यानी आपने उसकी कमजोरियों / खामियों का अनुभव करने के लिए किसी भी तरह की जासूसी नहीं की। ऐसे मामले में, जब आप ऐसे व्यक्ति को और उसकी खामियों को नफ़रत के साथ देखते हैं, इन दोषों से खुद को दूर करने में उसकी मदद करने के बजाय, आप हर जगह इस तरह से उसका प्रचार करते हैं, कि दूसरे लोग उससे अपने आप को दूर करने लगते हैं [वह व्यक्ति जिसकी आपने चुगली की थी]। अपने शब्दों के माध्यम से उस व्यक्ति की खामियों के खिलाफ, आप उसके खिलाफ दूसरों के साथ/ दूसरों के सामने दुश्मनी पैदा करना चाहते हैं, और आप उम्मीद करते हैं, कि लोग इसके लिए आपकी सराहना करें, और आपने जो किया है उसे स्वीकार करें। इस प्रकार के [बुरे] इरादों के साथ भी लोग चीजों की चुगली करते हैं, जो सत्य पर आधारित होती हैं। तो, यह केवल तब होता है, जब इरादा बुरा हो , नुक्सानदायिक हो, कि ऐसी वार्ता "ग़ीबत" (चुगली) का रूप ले लेती है - भले ही यह जानकारी सचाई पर निर्भर हो। अन्यथा [अर्थात अगर इरादा नेक हो] तो यह कोई गुनाह नहीं है।

एक बार, हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने उनकी एक धर्मपत्नी की उपस्थिति में किसी के बारे में कुछ उल्लेख किया। जब उन्होंने यह कहा, उनकी धर्मपत्नी ने उनसे सवाल किया कि उन्होंने यह क्यों कहा, और आश्चर्य से, कि अगर यह व्यक्ति के मौजूद न होने के कारण चुगली बन गया था। लेकिन हमें यह

महसूस करने की जरूरत है, कि महान लोगों को [अल्लाह की नजर में] उच्च दर्जा प्राप्त होता है, जब वे किसी अन्य व्यक्ति की उपस्थिति में किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में कुछ उल्लेख करते हैं, तो वे जानते हैं, कि कैसे उस व्यक्ति के लिए दूसरों की आँखों में शत्रुता या घृणा पैदा किए बिना इसे कैसे कहा जाए। वे इसे इस तरह से करते हैं - की सत्य पर आधारित हो - और जिसका उपयोग एक के रूप से दूसरों की शिक्षा का माध्यम बन जाता है, अच्छी सलाह देने और इसे दूसरों के लिए एक उदाहरण के रूप में लेने के लिए, लेकिन घृणा, संदेह, विवाद या दूसरों के प्रति उस व्यक्ति के लिए विकार पैदा करने के साधन के रूप में नहीं।

इसके विपरीत, ऐसे उदाहरणों और सलाहों के माध्यम से, [धर्मपरायण लोग / पैगम्बर] स्थिति को शांति, धीरज और प्रेम से दूसरों के लिए समाप्त करने में सक्षम रहते हैं। मैं यह कहना चाहूँगा, कि नबी ए करीम हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने कभी भी "ग़ीबत" (चुगली) या झूठी निंदा से भाग नहीं लिया। उनकी बातों के पीछे कोई बुरी नीयत नहीं थी और अल्लाह की नज़रों के सामने वो चुगली नहीं है।

तो, मैं आज के लिए यहाँ रुकता हूँ, और इंशा-अल्लाह, इस विषय पर मेरा शुक्रवार का उपदेश जारी रहेगा [अगले सप्ताह]। यह वास्तव में, जमात उल सहिह अल इस्लाम के सभी सदस्यों की शिक्षा के लिए और साथ ही साथ हज़रत मुहम्मद (स अ व स) की बाकी कि उम्मत के लिए भी एक विशाल और बहुत महत्वपूर्ण विषय है।

आशा हैं, अल्लाह उन बुराइयों के खिलाफ हम सबकी रक्षा करे। आमीन। आशा हैं, अल्लाह आपको धार्मिकता, तक्वा के साथ, सही मार्ग में सुरक्षित रखे। और आशा हैं, अल्लाह हमें "ग़ीबत" और "तजस्सुस" दूर रहने में मदद करें, इसके साथ-साथ अन्य सभी बुराईयाँ, जो इस पद्य में, और सुरः अल-हुजुरत में और कुरान में वर्णित है, से दूर रखे ।

इंशा-अल्लाह, आमीन।